दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2, 30/7/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	6	4	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 112½

टिप्पणी (Remarks): सामान्यत: लिखे गए उत्तर अच्छे हैं। अभ्यास करते रहें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश 'कबीर ग्रंथावली' से लिया गया है। इनमें कबीरदास जी 'दीपक" और "दीया" के माध्यम से जगत को समझाने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रसंग:- कबीरदास जी जीवन रूपी दीपक और तेल रूपी आत्मा के रूप में जीवन की सच्चाई को व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या:- उपरोक्त पद्यांश में कबीर ने जीवन की सार्थकता का वर्णन किया है जीवन रूपी दीपक में तेल रूपी आत्मा का क्या महत्व है, किस प्रकार दीपक, तेल, बाती आपस में सम्बन्धित है।

सौन्दर्यगत विशेषताएं:-
1) कबीर की साधनात्मक रहस्यवाद से प्रेरित पंक्ति।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2) जीवन की भावुकता का बोध करती कविता।

3) संध्या भाषा का प्रयोग।

4) प्रतीकात्मक भाषा के कारण प्रसाद गुण की कमी।

5) दृश्य बिम्ब का अच्छा प्रयोग।

ठीक है

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परवत समुद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिऐ जरै जो अस पिय लागि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश मलिक मोहम्मद जायसी कृत हिन्दी के प्रधान प्रेमाख्यान महाकाव्य 'पद्मावती' के 'नागमती वियोग' खण्ड से लिया गया है।

प्रसंग :- जायसी द्वारा बारह मासा वर्णन को आधार बनाकर नागमती के वियोग को जेठ के महीने पर आरोपित कर दिया है। इसी के माध्यम रत्नसेन से वियोग का वर्णन है

व्याख्या :- जायसी कहते हैं कि नागमती का विरह जेठ की ऋतु में ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पूरे जगत में आग लगी है, लू बह रही है, बवण्डर उठ रहा है, विरह ऐसा है कि चारों ओर की पवन का झोंका चल रहा है, लंका से लेकर पाताल तक सब कुछ उसकी चपेट में है। लंक डाह का अर्थ है पद्मावती की डाह जो की लंका में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहती है। खाना जाने पर शरीर को नहीं लग रहा है। जैसे कोवा खाना जाता है।

अन्त में जायसी कह रहे है कि ऐसी सती को सराहना चाहिए जो अपने पति के वियोग में इन्तजार कर रही है।

सौन्दर्यगत विशेषताएँ:

1) अवधी भाषा का अत्यन्त सधा प्रयोग।
2) बारह मासा वर्णन के माध्यम से वियोग वर्णन को शिखर पर पहुँचाया।
3) प्रतीक रूप में "लंका दाह" का प्रयोग कर व्यंग्य का भी प्रयोग किया।
4) बिम्ब और अलंकारों का सुन्दर प्रयोग।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सूरसागर' से 'भ्रमरगीत' शैली गयी है जो सूरदास की प्रसिद्धि का सबसे प्रमुख कारण है।

प्रस्तुत पद्यांश में सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ किस प्रकार योगमार्ग और ज्ञानमार्ग का मजाक उड़ा रही हैं और भक्ति अर्थात सगुण की प्रशंसा कर रही है।

गोपियाँ सीधे शब्दों में उद्धव से कह रही हैं कि एक म्यान में दो तलवार कैसे रह सकती है जबकि हमारे हृदय में श्री कृष्ण का वास है तो योग कहाँ से आयेगा। वे कहती हैं कि वे तो कृष्ण की अनुरागी हैं उन्हें ब्रह्मचक्र भेदन, श्वास और टेढ़े कान की क्रिया नहीं आती है। वे कहती हैं कि उन्हें कृष्ण का जूठा खाना ही पसन्द है। वे कहती हैं कि वे सपनों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं आने वाली। सूरदास अन्त में कहते हैं कि ध्यान और ज्योति तथा कोइड़ा तीनों का सूने में उत्पादन नहीं होता है।

सौन्दर्यगत विशेषताएं :-

1) सगुण को निर्गुण से श्रेष्ठ बताया गया है।
2) ब्रजभाषा का अत्यन्त मधुर प्रयोग।
3) वचन प्रति वक्रता न होकर भाव प्रेरित वक्रता का सुन्दर प्रयोग।
4) "कमल नयन" में रूपक अलंकार का प्रयोग।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'शृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास कृष्णकाव्य धारा के शिखर पुरुष है उनके 'बाल वर्णन' को विश्व का सर्वश्रेष्ठ वर्णन माना जाता है। उनके शृंगार और उपालम्भ दोनों का प्रयोग 'भ्रमरगीत' में आसान में मिल से गये है। ऐसे में सवाल बनता है कि क्या शृंगार का ऐसा उपालम्भ हिन्दी साहित्य में दिखाई देता है?

वैसे तो सूरदास और तुलसी दोनो महाकवियों को सगुण धारा का महानकवि माना जाता है। उनकी रचनाओं में निर्गुण पर सगुण की न केवल वरीयता दी गयी है बल्कि निर्गुण का खण्डन करते हुए सगुण को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। परन्तु एक तरफ तुलसी जहाँ अपने प्रबन्ध महाकाव्य 'रामचरितमानस' के माध्यम से सगुण को स्थापित करते है। परन्तु तुलसी के यहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शृंगार तो है परन्तु उपालंभों में वह धार नहीं है जो सूरदास के यहाँ है। जब वह कहते है "निर्गुण कौन देश के वासी" "आए जोग सिखावन पाड़े"

इस प्रकार तुलसी शृंगार का वर्णन करते हैं लेकिन शृंगार का उपालंभ में कहने की क्षमता सूर के काव्य में दिखती है। वह तुलसी में नहीं दिखता है।

भक्ति काल के अन्य कवि कबीर पर तो वे निर्गुण धारा के कवि है अतः सामाजिक और सांस्कृतिक योग उच्च कोटि का है। "तलफै बिन बालम मोर जिया" में शृंगार भी है तथा सगुण के लिए दशरथ सुत तिहु लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना" इसमें भी सूरदास जैसा उपालंभ नहीं है क्योंकि उपालंभ की विशेषता होती है कि वह किसी एक लक्ष्य को के कहा जाता है। सूरदास की गोपियाँ उद्धव को लक्ष्य करती

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है और निर्गुण का मजाक बनाती है। - " पुद्यौ सांचे मे ढानी "
जबकि कबीर दास पूरे समाज को सम्बोधित करते है। इसलिए कबीर के यहाँ व्यंग्य तो है लेकिन शृंगार का उपालम्भ नहीं है।
जायसी के काव्य में 'नागमती विरह' वर्णन में शृंगार रस विशेषतः वियोग शृंगार का श्रेष्ठ स्तर हुआ है। आचार्य शुक्ल ने इसके वियोग की तारीफ की है। लेकिन यहाँ उपालंभ नहीं है। यहाँ भावनाओं को ऋतुओं, पक्षियों आदि पर आरोपित किया गया है परन्तु सूरदास की गोपियाँ कहती है कि " हमरी जाती बाती कमल नयन" इसमें संयोग शृंगार के साथ वियोग का भी अद्भुद मिश्रण है। सूर का उपालंभ इसलिए श्रेष्ठ शृंगार काव्य हो जाता है।
रीतिकाल को सूरदास का विस्तार माना जाता है क्योंकि ब्रजभाषा और शृंगार का यहाँ भी अद्भुद वर्णन है परन्तु सूरदास

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का काव्य जहाँ भावों पर केन्द्रित हो वहीं रीतिकाल में विलासी पद्माकर का श्रृंगार लौकिक है।

इस प्रकार यह कहने में सन्देह नहीं की कुमती, जापती, और रीतिकाल के श्रृंगाररस के काव्य उपालंभ के स्तर पर सूरदास के उपालंभ के बराबर में नहीं ठहरते।

Good 11/2/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कबीर दास, भक्तिकालीन निर्गुण काव्य धारा के प्रवर्तक कवि हैं। ऐसे में यह देखना न केवल रोचक बल्कि आवश्यक भी है कि उन पर कौन दर्शनों का प्रभाव है? और उनका खुद का दर्शन क्या है?

कबीर 'अद्वैतवाद' से प्रभावित हैं। वे भी ब्रह्म को एक मानते हैं तथा उसकी निर्गुण रूप में कल्पना करते हैं।

"जोई जोई पिंडे,
सोई ब्रह्मांडे।"

आत्मा और ब्रह्म में भेद भी कबीर नहीं मानते हैं। "फूटा घट जल, जलहि समानि" यहाँ कबीर ज्ञान तत्व है कि माया रूपी या शरीर रूपी घड़ा के फूटने पर आत्मा परमात्मा में मिल जाती है।

कबीर दास के यहाँ भी माया को माना गया है। "माया महा ठगिनि हम जाने"। प्रथा स्त्री के माया रूप का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विद्रोह भी है।
जगत को भी मिथ्या माना है
. "बूंद पड़ि घुल जाती है" बूंद पड़ते ही गल हो जायेगी।
इतना ही नहीं कबीर निर्गुण ब्रह्म के साथ नाथ की हठयोग परम्परा से भी प्रभावित है। " गगन ... कमल ... पानी", परन्तु बाद में सूफी के भावनात्मक रहस्यवाद को भी स्वीकार करते हैं। "तलफै बिन बालम मोरे जीया"।
कबीर के दर्शन में प्रेम और गुरु का महत्व भी है। यह उन्हें ... बनाता जाता है।
" गुरु गोविन्द दोऊ खड़े" हैं कबीर गुरु को गोविन्द से बढ़कर स्थान देते हैं।
अतः दर्शन में कबीर पर तत्कालीन लगभग सभी प्रमुख दर्शनों का प्रभाव देखा जा सकता है। परन्तु कबीर मूलतः भक्त थे। वे कवि, विचारक, सुधारक बाद में थे। बल्कि उनके भक्त रूप की अभिव्यक्ति थी। अतः उनका दर्शन भी उनकी भाषा की तरह पंचमेल दर्शन था।

7/15
अपेक्षा अनुरूप उत्तर, ...

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
लखें।
ase do not write
thing except the
stion number in
space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकालीन युग एक संक्रमण कालीन दौर था। जहाँ एक तरह हिन्दू-इस्लाम का संघर्ष था तो एक तरह सांमतवाद और आधुनिक मूल्यों का टकराव भी था। वहीं सगुण और निर्गुण का द्वन्द्व भी कम नहीं था। अलग-अलग कवि अपने-अपने स्तर पर इन विरोधों में समन्वय तो कहीं अपने विचार को श्रेष्ठ करने में लगे थे। ऐसे में 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण पर सगुण की विजय का काव्य कहा जाना एक विवाद का विषय रहा है।

यूँ तो भक्तिकालीन काव्य अपनी संवेदना और समन्वय के कारण हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग है लेकिन यहाँ भी सगुण-निर्गुण विवाद है।

सूरदास सगुण की स्थापना अपने 'भ्रमरगीतसार' से करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे न केवल सगुण की स्थापना करते हैं बल्कि निर्गुण का मजाक भी उड़ाते हैं।

सगुण कवि तुलसी भी निर्गुण को खारिज करते हैं लेकिन सूरदास का सम्पूर्ण भ्रमरगीत सार इसका उदाहरण है।

"निर्गुण कौन देश को वासी"

इस प्रकार सूरदास का भ्रमरगीत सार निर्गुण पर सगुण की विजय का काव्य है।

6/15

ठीक है
मॉडल उत्तर भी देखें।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

3. (क) कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये।

20

भक्तिकाल के सबसे विवादित कवियों में एक कबीर दास जी है। यहाँ इनके विवादित प्रतीकों में एक तरफ शुक्ल जी है तो दूसरी तरफ आचार्य द्विवेदी है। शुक्ल जी कबीर की भाषा को 'अनगढ़' मानते हुए इसे खारिज करते है तो आचार्य द्विवेदी इसे "वाणी का डिक्टेटर" घोषित करते है। इसलिए कबीर की भाषा विचारणीय है।

कबीर की भाषा को 'बेचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी भाषा' भी कहा जाता है। इसमें भाषा संस्कार का वह स्तर दिखाई नही देता है जो शुक्ल जी प्रिय कवि तुलसीदास जी के यहाँ दिखाई देता है। कबीर की भाषा में कई भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दावली का प्रयोग मिलता है इसका सबसे प्रमुख कारण है कि कबीर "माति कागद छुयो नहीं" और "कलम गह्यो नहीं हाथ"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसलिए बोलचाल भाषा के जो भी शब्द मिले इन्होंने ले लिए दूसरा कारण इनका घुमक्कड़ स्वभाव। ये जहाँ जाते वहाँ के शब्द इनकी भाषा में स्वाभाविक था।

इसके अलावा कबीर पर आरम्भिक रूप में नाथ परम्परा का गहरा प्रभाव था जिसकर नाथों की अंतःसाधनात्मक पद्धति से उत्पन्न "संधा भाषा" का प्रभाव कबीर की "उलट बांसियाँ" है।

– "नैया बीच नदियाँ डूबत जाय"

प्रतीकों का अर्थ खुलने पर ही यह भाषा समझ में आती है।

कबीर के सामाजिक व्यंग्यों वाली भाषा अधिक आक्रोधात्मक है।

"पकड़कर पाथर जोड़कर"

इसमें तद्भव शब्दावली की प्रमुखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अलावा इनकी सूफी प्रभाव से प्रेरित भावनात्मक रहस्यवादी कविताओं में फारसी शब्दावली का भी प्रयोग मिलता है।

कबीर के साखी वाक कविताओं उनकी भाषा का सबसे रचनात्मक रूप मिलता है, इतनी तन्मयता मिलती है, भावों में एक प्रवाह मिलता है जो कई सामान्य कवियों को पीछे छोड़ देता है।

" हरि जननी मैं बालक तेरा
काहे न अवगुण बकसु मेरा।"

इस प्रकार आचार्य द्विवेदी के 'वाणी के डिक्टेटर' कबीर अपनी जहाँ तक भाव इतना सीधे कहाँ जहाँ रही बन पड़ा वहाँ "दरेरा" देते हुए कह गये हैं। कबीर की वाणी यह विशेषता है कि इसमें "संस्कृत है कूप जल" की तरह संकीर्णता नहीं बल्कि "भाषा है बहता नीर" है।

11/20 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्‌घाटन परम मनोहर है।" इस कथन के संदर्भ में सूर के भ्रमरगीत पर विचार कीजिये। 15

आचार्य शुक्ल "कविता क्या है" के माध्यम से साहित्य या कविता में रीतिकालीन बुद्धि प्रेरित वक्रता का विरोध करते हुए सूर की वचन की भाव प्रेरित वक्रता की प्रशंसा और समर्थन किया है। यह देखना रोचक होगा कि 'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता का उद्घाटन किस रूप में हुआ है।

सूरदास के "सूरसागर" में "भ्रमरगीत सार" उनकी प्रतिष्ठा का सबसे महत्वपूर्ण कारक है। इसमें उन्होंने सगुण की निर्गुण की वरीयता स्थापित की है। इसके लिए इन्होंने उद्धव और भ्रमर को प्रतीक रूप में चुना है।

सूरदास वैसे भी [illegible] के श्रेष्ठ कवि है। इनमें इनका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपालंभ शृंगार रस की चाशनी में डूबा हुआ है।

वक्रता से चमत्कार उत्पन्न होता है। विशेषतः उक्ति वक्रता से। परन्तु, सूरदास का उद्देश्य चमत्कार उत्पन्न करना नहीं बल्कि प्रभाव वृद्धि है। अतः इनके यहाँ भाव उक्ति वक्रता है जो चमत्कार से ज्यादा प्रभाव उत्पन्न करती है।

प्रेम का भाव अनन्त ही कुछ और आध्यात्मिक भाव है। सूरदास की गोपियां श्रीकृष्ण के प्रेम में इसी भाव से ही रमती हैं। जब वे उद्धव से तर्क करती है तो वे केवल अपने भावों को व्यक्त कर रही होती है परन्तु उनमें तीव्रता अधिक होने के कारण इनमें वक्रता आ जाती है।

जब मनुष्य अपने भावों को रोक नहीं पाता है तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसके आधिक तीव्र होने पर अभिव्यक्ति होने में वक्रता आ ही जाती है।

इसलिए यह कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं है कि "प्रयाणगीत" की वचन 'भाव' होती वक्रता प्रेम प्रसूत है। विरह और मिलन की चरम स्थिति में प्रेम भाव की अभिव्यक्ति से वक्रता का जन्म होना स्वाभाविक है।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) वर्तमान जीवन-संदर्भों में तुलसी की रामराज्य परिकल्पना की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

किसी कवि और रचनाकार की श्रेष्ठता उसके द्वारा रचित काव्य या कला की सार्थकता से तय होती है। अपने युग और समाज का अतिक्रमण करते हुए सर्वकालिक और सार्वभौमिक प्रासंगिकता ही प्रसिद्धि का सर्वश्रेष्ठ कारण होता है। तुलसी दास के 'रामचरित मानस' में वर्णित राम राज्य की कल्पना आज भी प्रासंगिक है क्योंकि इसमें भी आज की समस्याओं का समाधान व चिंता है।

तुलसी का रामराज्य में एक समतामूलक समाज की रचना की गयी है वे कहते हैं—

" नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना "

बेरोजगारी, गरीबी और दुख आज की भी समस्या है रामराज्य में यह समस्या नहीं है। अतः तुलसी के रामराज्य की यह सार्थकता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आज भी है।

इतना ही नहीं, तुलसी के राम राज्य में ऊँच-नीच का भेद-भाव भी नहीं है वहाँ एक समन्वय का प्रयास है आज के समय में जीनकर दलितों पर हमले एक समुदाय विशेष पर सांप्रदायिकता की भावना का आरोप लगाना आदि तुलसी के रामराज्य की आवश्यकता पर जोर देता है—

"अगुण सगुण न कछु भेदा"

वे कहते हैं— "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" यह भी हमारे आज के समाज के लिए आवश्यक है।

इसके अलावा तुलसी दास पर महिला विरोधी और दलित विरोधी होने का आरोप ~~[illegible]~~ कुछ आलोचक लगाते हैं—

"ढोल गवार शूद्र पशु नारी"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वे सब ताड़न के अधिकारी"

वे आरोप पूरी तरह सही नहीं है क्योंकि वे पराधीनता को अच्छा नहीं मानते हैं। वे नारी के सुख और दुख की बात करते हैं। समन्वयवादी समाज की बात करते हैं। शंबूक प्रसंग में शामिल नहीं करते हैं। अगर वे सीता है भी तो उनके पुत्र भी हैं।

इस प्रकार तुलसी के रामराज्य की प्रासंगिकता आज भी है। विशेषकर गरीबी, असमानता, साम्प्रदायिकता के संदर्भ। ये समस्या आज की सबसे चुनौतीपूर्ण समस्या है।

8/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद रचित 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है।

नाटककार यहाँ स्कंदगुप्त की उस मनोदशा का वर्णन कर रहा है जब इसे राजा का पद कोई गौरवशाली पद नहीं लगता है।

स्कंदगुप्त कहता है कि वह चेतना के स्तर पर राजा तो है परन्तु अन्तःमन में कहीं एक भाव है जो उसे राजा मानने से इन्कार कर रहा। वह भाव उसे बस एक खिलौना मानता है। उसके राज मुकुट को महज एक श्रमिक की टोकरी भर मानता है। इसलिए अपने मन के अन्तर्विरोध और द्वंद्व को दबाने के लिए प्रसाद जी के अनुसार स्कन्दगुप्त को बौद्धों का निर्वाण, योगी की समाधी और पागलों की विस्मृत शक्ति चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष—

1) एक राजा को या शासक को ऐसी स्थिति में रहना चाहिए जिसमें निर्वाण, समाधि और वैराग्य सब है।

2) आज के समय में शासक के मन में द्वन्द्व होना चाहिए। राजनेता केवल जनता का प्रतिनिधि होता है।

3) 'मैकबेथ' की पंक्ति "जीवन एक कहानी है" इसके समान मान रहती है। शेक्सपीयर के मैकबेथ की भी यही मान है

4) भाषा तत्सम है

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं-पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश सशक्त राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया। इसके रचनाकार 'मन्नू भण्डारी' है।

उक्त गद्यांश में हीरा के बेटे के मृत्यु पर मुख्यमंत्री दा साहब के उसके घर आने पर गाँववालों की मनोदशा का वर्णन है।

दा साहब जब आते है तो गाँववालों में बड़ी प्रसन्नता है। इसे लोग दा साहब का बड़प्पन मान रहे है। लोगों को ~~[illegible]~~ शबरी के बेर और निषाद राज के नाव जैसा याद आ रहे है। कुछ लोग तो यह भी मान रहे है कि दा साहब द्वारा दलितों की बस्ती में आना हीरा के लिए बड़ा है। लोग अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के चलते उससे जलन भी रख रहे है

विशेष:

1) वर्तमान समय में भी राजनीति - जैसे ही कहीं कोई साम्प्रदायिक घटना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

होती है या कोई शहीद होता है- राजनेताओं द्वारा वहाँ पहुँचकर उनका राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास किया जा रहा।

2) नेताओं द्वारा प्रभावित परिवार या लोगों का दौरा करने पर गांव वाले आज भी प्रतिष्ठा और सम्मान का विषय मानते हैं।

3) आमजन के मनोविज्ञान का अच्छा प्रयोग • लोग इर्ष्या" भी कर रहे हैं

4) भाषा अत्यन्त ही प्रभावशाली और प्रसंगानुकूल है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश, मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन" से लिया गया है।

इस गद्यांश में कालीदास के द्वन्द्व को दिखाया गया है।

कालीदास कहता है कि वह सुविधा और प्रभुता के मोह में पड़ गया। और वह अपने स्वभाविक क्षेत्र को छोड़कर उस कार्य में जुड़ गया जो उसका स्वभाविक क्षेत्र नहीं बल्कि उसकी अतृप्त इच्छा का क्षेत्र था। उसे एहसास होता है कि वह अपने स्वधर्म से नहीं जुड़ पाया। बल्कि वह उस क्षेत्र से जुड़ा जो उसका अपना अधिकार क्षेत्र नहीं था। इस बात का उसे अब एहसास होता है इसीलिए वह दुःखी भी है कि वह अपने स्वधर्म से हट गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:

1) मनुष्य के स्वधर्म और लालच के बीच द्वन्द्व को दिखाया गया है यदि लालच का चुनाव किया जायेगा तो अन्तरात्मा की पुकार भी सुननी चाहिए।

2) मनुष्य का सर्वोत्तम विकास उसके स्वधर्म से जुड़कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

3) अन्तर्द्वन्द्व में व्यक्ति को हमेशा अपने सरल प्रवृत्ति का पालन करना चाहिए प्रसाद जी और मुक्तिबोध के यहाँ भी यह द्वन्द्व है तो स्कंदगुप्त को भी है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के उन श्रेष्ठ रचनाकारों में से जो इतिहास और दर्शन दोनों में गहरी समझ और रुचि रखते हैं। प्रसाद की रचनाओं में हमेशा उनके दार्शनिक प्रभाव की चर्चा की जाती है। 'कामायनी' से लेकर उनके नाटकों में भी दार्शनिक प्रभाव की खोज की जाती है। 'स्कंदगुप्त' नाटक एक श्रेष्ठ नाटक है अतः यह आलोचकों के लिए हमेशा जिज्ञासा का विषय रहा है कि इसमें दर्शन किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

जयशंकर प्रसाद का दर्शन 'प्रतिभिज्ञा वाद' था। वे अपने दर्शन में अपनी रचना को घुला देते हैं। उनका प्रतिभिज्ञा वाद या प्रयत्नवाद दर्शन 'स्कंदगुप्त' में स्कंदगुप्त के कथनों में व्यक्त हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कन्दगुप्त कहता है कि 'अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन होता है।" यह प्रसाद के दर्शन का मूल है। वे अधिकार को हमेशा चुनौती देते हैं, व्यक्ति को उनके स्वधर्म से जोड़ने का प्रयास करते हैं।

प्रसाद के दर्शन में छद्म का स्थान नहीं है। उनका मानना है कि क्रिया, ज्ञान और इच्छा में समन्वय होना चाहिए। इसी से व्यक्ति का श्रेष्ठ निकलता है। यह भाव 'कामायनी' में भी व्यक्त हुआ है और 'स्कन्दगुप्त' में भी।

'स्कन्दगुप्त' स्वयं हमेशा अन्तर्द्वन्द्व में रहता है। अन्त में जाकर उसे अपने स्वधर्म की प्राप्ति होती है। पहले वह राजा तो होता है परन्तु उसे क्रिया और इच्छा के स्तर पर स्वीकार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं होता है। इसलिए वह हमेशा
बेचैन और द्वंद्व में रहता है
यही हाल 'कामायनी' में श्रद्धा का
भी होता है।

इस प्रकार प्रसाद के नाटक
'स्कन्दगुप्त' पर उनके गहरी
समझ और दर्शन का प्रभाव
है, यहाँ राष्ट्रवाद और महिला
पात्र - विशेषतः द्वारा किया गया
भी उनके दर्शन की अभिव्यक्ति
ही है।

8½/20

गहराई लाएँ। मॉडल उत्तर देखें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश न केवल नई कहानी आन्दोलन के प्रवर्तकों में से थे बल्कि नये उपन्यास और नाटककार भी थे। द्वितीय विश्व की परिस्थितियों में उत्पन्न लघुमानव वाद और अस्तित्ववाद उनकी रचना का प्रमुख दार्शनिक आधार रहा है। ऐसे में "आषाढ़ का एक दिन" नामक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित नाटक में भी उनकी दार्शनिक विचारधारा की खोज करना अत्यन्त रोचक होगा।

'आषाढ़ का एक दिन' का कथानक वैसे तो ऐतिहासिक है परन्तु फिर भी यह मोहन राकेश के अस्तित्ववादी दर्शन से अछूता नहीं है। इसके पात्र कालिदास का सम्पूर्ण जीवन तथा मल्लिका का पूरा जीवन संघर्ष इस अस्तित्ववादी विचार का द्योतक है।

अस्तित्ववाद में माना गया है कि व्यक्ति का कोई भी निर्णय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पूर्ण नहीं होता है। प्रत्येक निर्णय का सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष होता है जब हम एक चुनते हैं तो दूसरा छूट जाता है जिस प्रकार कालिदास प्रतिष्ठा, राजाश्रय और अधिकार को चुनता है उसके मल्लिका और उसका अपना प्रदेश छूट जाता है। जिसको बाद में स्वीकार करते हुए कहता है – " मैं विश्वास से दूर हट आया हूँ।"

इतना ही नहीं, अस्तित्ववाद यह मानता है कि न केवल हमारा निर्णय और चुनाव अपूर्ण होता है ~~[illegible]~~ बल्कि व्यक्ति स्वयं से अपूर्ण होता है – " कालिदास क्या है एक अपूर्ण विलोम" ।

इस प्रकार 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक वैसे तो ऐतिहासिक परिवेश का नाटक है परन्तु मोहन राकेश ने इसमें आधुनिक दर्शन अस्तित्ववाद अवश्य घुला दिया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र न केवल आधुनिक खड़ी बोली के प्रथम सर्वश्रेष्ठ रचनाकार थे बल्कि वे हिन्दी व हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भी थे। उनके इस नवजागरण की सिवाते सटीक ~~[illegible]~~ अभिव्यक्ति ~~[illegible]~~ 'भारत दुर्दशा' नाटक में हुई है। उसकी रंगमंचीयता का निवाह अत्यन्त गम्भीर है क्योंकि यह नाटक विधा की ~~[illegible]~~ प्रारम्भिक कृतियों में है।

'भारत दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता आरम्भिक नाटकों में श्रेष्ठ है। इसमें तीन अंक और लगभग 10 के ऊपर दृश्य है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र न केवल एक अच्छे नाटककार थे बल्कि एक श्रेष्ठ रंगकर्मी भी थे। अतः वे हमेशा रंगमंच का ध्यान रखते हुए नाटक लिखते थे। जिसको 'हरिश्चन्द्र मण्डली' के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के माध्यम से बोलते भी थे।

'भारत दुर्दशा' में रंगमंचीय साधनों का प्रयोग किया गया है। इन पर पारसी थियेटर का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है जो इनके नाटकों में गीतों के माध्यम से व्यक्त होता था।

'भारत दुर्दशा' में रंगमंचीय संकेतों का भी उपयोग किया गया है।

इस नाटक में रंगमंचीय दृष्टि से कुछ समस्याएं भी हैं सबसे बड़ी समस्या कठिन दृश्यों का समावेश। श्मशान जैसे दृश्यों को मंच पर करना कठिन है।

परन्तु, उपरोक्त सीमाएं भारतेन्दु की न होकर उनके युग की सीमा है क्योंकि ये नाटक लेखन परम्परा का शुरुआती दौर था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जहाँ पहली बार नाटक लिखे जा रहे थे। इतालीय रंगमंचीय तत्वों का वैसा यहाँ इन्हीं मिलते हैं जो मोहन राकेश में यहाँ मिलता है लेकिन प्रसाद के रूपों में कम कठिन दृश्यों का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार 'आठ इदेहा' रंगमंचीयता की दृष्टि से आरम्भिक हिन्दी नाटकों में केवल मील का पत्थर है बल्कि आने वाले नाटकों के लिए एक प्रतिमान भी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation